

Padma Shri



SMT. DURGA BAI VYAM

Smt. Durga Bai Vyam is a Pardhan Gond artist hailing from Madhya Pradesh. Mentored and trained in the art of Gond painting by the father-figure of Pardhan Gond School of art —Jangarh Singh Shyam himself. Smt. Durga Bai has worked hard to resuscitate and regenerate the tribal art form. Her paintings mostly drawn from the folklores and stories of her tribe and their myths.

2. Born on 1st January, 1976 in a Pardhan Gond family in the village of Barbaspur, District-Dindory (M.P.), Smt. Vyam was traditionally trained in Dhigna (geometrical patterns drawn on wall & floor to decorate houses). After her marriage to Subhash Singh Vyam, another Gond artist of much repute, she lived in Sunpuri village for several years.

3. Smt. Vyam along with her family moved to Bhopal (M.P.) in 1996. It was here that she started painting Dhigna patterns on the walls of her rented house. The paintings captured the attention of many and the humble beginnings to a splendid journey in art began for Durga Bai. The celebrated Pardhan artist Late Jangarh Singh Shyam recognized her painting talent. Impressed by her work, he encouraged her to paint on paper. Smt. Vyam's career started with an artist's camp organized by Bharat Bhawan (1996) and thereafter, she worked for cultural centers in New Delhi, Dehradun, Mumbai, Khajuraho, Chennai etc. She has also participated in many camps and craft fairs. Her paintings were displayed in several exhibitions. In 2018, she has showcased her work in Kochi-Muziris Biennale. She has also visited London, Dubai, Frankfurt to show case her books & paintings. In 2003, Smt. Durga Bai debuted in digital and print illustrations through books and has since been illustrating books for publishers across countries. Most of the work is for children. These include "One Two Three" and "Night life of trees" Published by Tara Books, the first big book in Hindi called "Khichadi" published by Eklavya and "Bhimayana" on the life of Ambedkar published by Navyana publishing.

4. Smt. Vyam's genius lies in her conscious endeavor to keep the tribal art alive and thriving on modern media while keeping its soul, simplicity and essence intact. The most striking feature of her paintings is her ability to tell a story. Vibrant colours and universal themes are the hallmarks of her work. Durga Bai illustrated a book "Bhimayana" that raised the issues of caste discrimination against Dalits in India. Her compelling use of traditional graphic art and her artistic skill give her paintings a unique and powerful vision. Through her work Durgabai has taken risks: she has transcended the boundaries of the traditional western boxed illustrations by making fluid and lively illustrations.

5. Smt. Vyam has received several awards. The Madhya Pradesh Hastashilpa Vikas Nigam conferred a state award on Durga Bai in 2002. She was given the Rani Durgawati National Award for Excellence in Traditional Painting in 2009. She was felicitated by Indira Gandhi National Centre for Arts, New Delhi for her contribution to art. Pratham Books felicitated her with the Katha Chitrakala award in 2009. The Aditya Vikram Birla Kalakiran Award was conferred on her in 2013 by the reputed Sangeet Kala Kendra, Mumbai. Durga Bai Vyam has won many accolades — National and international during the course of her journey. Some of these are State Award(2002), Shri Vishnu Chinchalkar Award (2008), Rani Durgawati National Award (2009), Sangeet Kala Kendra Award(2012), International Festival of films on Tribal art and culture Award(2012), Indira Gandhi National Award(2013), Devi Award(2015). Her illustrated book, 'The Night Life of Trees' won the Bologna Ragazzi Award in Italy.

पद्म श्री



श्रीमती दुर्गा बाई व्याम

श्रीमती दुर्गा बाई व्याम मध्य प्रदेश की प्रधान गोंड कलाकार हैं। उन्हें, प्रधान गोंड स्कूल ऑफ आर्ट के पिता—तुल्य जनगढ़ सिंह श्याम द्वारा गोंड चित्रकला का परामर्श और प्रशिक्षण प्रदान किया गया। श्रीमती दुर्गा बाई ने आदिवासी कला रूप को पुनर्जीवित और पुनर्सृजित करने के लिए भरपूर परिश्रम किया है। उनकी चित्रकारी ज्यादातर लोककथाओं और अपनी जनजाति की कथाओं और मिथक पर आधारित हैं।

2. 1 जनवरी 1976 को जिला—डिंडोरी (म.प्र.) के बरबसपुर गांव में एक प्रधान गोंड परिवार में जन्मी, श्रीमती व्याम को पारंपरिक रूप से धिग्ना (घरों को सजाने के लिए दीवार और फर्श पर बनाए गए ज्यामितीय आकृतियाँ) का प्रशिक्षण दिया गया था। एक अन्य प्रसिद्ध गोंड कलाकार सुभाष सिंह व्याम से विवाह के बाद, वह कई वर्षों तक सुनपुरी गाँव में रहीं।

3. श्रीमती व्याम 1996 में अपने परिवार के साथ भोपाल (म.प्र.) चली आईं। यहीं पर उन्होंने अपने किराए के मकान की दीवारों पर धिग्ना चित्रकारी करना शुरू किया। उनकी चित्रकारी ने बहुत से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और उसके बाद कला जगत में दुर्गा बाई की शानदार यात्रा की शुरुआत हुई। विख्यात प्रधान कलाकार स्वर्गीय जनगढ़ सिंह श्याम ने उनकी चित्रकला प्रतिभा को पहचाना। उन्होंने दुर्गा बाई के काम से प्रभावित होकर उन्हें कागज पर चित्रकारी करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्रीमती व्याम की कला यात्रा भारत भवन (1996) द्वारा आयोजित एक कलाकार शिविर से शुरू हुई और उसके बाद, उन्होंने नई दिल्ली, देहरादून, मुंबई, खजुराहो, चेन्नै आदि स्थित सांस्कृतिक केंद्रों के लिए काम किया। उन्होंने अनेक शिविरों और शिल्प मेलों में भी भाग लिया है। उनके चित्रों को कई प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया गया था। 2018 में, उन्होंने कोच्चि—मुज़िरिस बिएननेल में अपने कृतियों का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपनी पुस्तकों और चित्रकारी का प्रदर्शन करने के लिए लंदन, दुबई, फ्रैंकफर्ट की भी यात्राएं की हैं। 2003 में, श्रीमती दुर्गा बाई ने पुस्तकों के जरिए डिजिटल और प्रिंट इलस्ट्रेशन की शुरुआत की और तब से पूरे देश के प्रकाशकों के लिए पुस्तकों का चित्रण कर रही हैं। इनमें तारा बुक्स द्वारा प्रकाशित “वन टू थ्री” और “नाइट लाइफ ऑफ़ ट्रीज़”, एकलव्य द्वारा प्रकाशित “खिचड़ी” नामक हिंदी की पहली बड़ी पुस्तक और नवयान प्रकाशन द्वारा अम्बेडकर के जीवन पर प्रकाशित “भीमायण” शामिल हैं।

4. श्रीमती व्याम की प्रतिभा जनजातीय कला को जीवित रखने के उनके सचेत प्रयास तथा उसकी आत्मा, सादगी और सार को बरकरार रखते हुए आधुनिक मीडिया के माध्यम से आगे बढ़ने में समाई हुई है। उनके चित्रों की सबसे प्रमुख विशेषता कथा अभिव्यक्ति की उनकी सुयोग्यता है। जीवंत रंग और सार्वभौमिक विषय उनके कार्य की पहचान हैं। श्रीमती दुर्गा बाई ने, भारत में दलितों के प्रति जातिगत भेदभाव के मुद्दों का उल्लेख करने वाली एक पुस्तक “भीमायण” में चित्रांकन किया। पारंपरिक ग्राफिक कला का आकर्षक प्रयोग और उनका कलात्मक कौशल उनके चित्रों को एक अद्वितीय और सशक्त दृष्टि प्रदान करता है। अपनी कला के माध्यम से श्रीमती दुर्गा बाई ने जोखिम उठाया है: उन्होंने प्रवाहमय और जीवंत चित्रण के द्वारा पारंपरिक पश्चिमी दायरे से बाहर निकलकर चित्रण किया है।

5. श्रीमती व्याम को अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। मध्य प्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम ने 2002 में श्रीमती दुर्गा बाई को राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें 2009 में पारंपरिक चित्रकला में उत्कृष्टता के लिए रानी दुर्गावती राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया था। कला में उनके योगदान के लिए उन्हें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया था। 2009 में प्रथम बुक्स ने उन्हें कथा चित्रकला पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्हें 2013 में प्रतिष्ठित संगीत कला केंद्र, मुंबई द्वारा आदित्य विक्रम बिड़ला कलाकिरण पुरस्कार प्रदान किया गया था। श्रीमती दुर्गा बाई व्याम ने अपनी कला यात्रा के दौरान कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार अर्जित किए हैं। इनमें राज्य पुरस्कार (2002), श्री विष्णु चिंचलकर पुरस्कार (2008), रानी दुर्गावती राष्ट्रीय पुरस्कार (2009), संगीत कला केंद्र पुरस्कार (2012), जनजातीय कला और संस्कृति पर अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव पुरस्कार (2012), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार (2013), देवी पुरस्कार (2015) आदि शामिल हैं। उनकी सचित्र पुस्तक ‘द नाइट लाइफ ऑफ़ ट्रीज़’ ने इटली का बोलोग्ना रगाज़ी पुरस्कार अर्जित किया।